विषयानुक्रम

अध्याय पृष्ठ

प्राक्कथन

१. (i) **रघुवंश महाकाव्य में राजतन्त्र शासन का स्वरूप** १–४०

महाकाव्य का विशिष्ट कथानक, कवि का अभीष्ट, राजतन्त्र के पक्ष, विभिन्न राज्य, इन्दुमती स्वयंवर, राम का प्रत्यागमन ।

(ii) **रघुवंशी राजाओं का प्रशासन**

रघुवंशी राजाओं के गुण, प्रजानुरंजन, गोपूजा, रघु की अकिंचनता, उत्तराधिकार एवं प्रजा की सम्मति, प्रजा की रक्षा एवं दण्ड-व्यवस्था, गुप्तचर पद्धति, कर व्यवस्था, सैन्य संगठन, सेना का सदुपयोग, विजित राज्यों के प्रति व्यवहार, राजा-मंत्री सम्बन्ध, देश और धरती से अपनत्व और कोष, कृषि एवं वाणिज्य ।

२. **'कुमारसम्भव' में राजतन्त्र** ४१–६०

रक्षक की आवश्यकता, देवताओं का पराभूत होना, शाम्येत्प्रत्य-पकारेण नोपकारेण दुर्जनः, सुर-असुर राजनीति, राजनीति में बल-बुद्धि, असाध्य साधन, नीति एवं युक्ति, कामदेव का सम्मान, अग्नि का सहयोग, अनुचरों के प्रति सहानुभूति, सेनापति का उद्भव, उसकी योग्यता, देवसेना का संगठन, चतुरंगिणी सेना, अस्त्र-शस्त्र, युद्ध से स्वर्ग प्राप्ति, वीर प्रशंसा, शकुन-अपशकुन-विचार, कुमारसम्भव के राजतन्त्र का सार ।

३. **'मेघदूत' में तत्कालीन राजतन्त्र का संकेत** ६१–६७

कुबेर का प्रशासन एवं अलकापुरी का वैभव, सम्पत्, सौन्दर्य, सुख-भोग, मेघ का दूतत्व ।

४. **'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के राजतन्त्र की रूपरेखा** ६८–९४

राजधर्म और आखेट प्रिय दुष्यन्त, क्रूरताहीन आखेट, राजा के क्रिया-कलाप और धार्मिक संस्थाएँ, ऋषियों की अहंमन्यता और उसकी मर्यादा राजधर्म की सर्वोच्चता, राजा की जितेन्द्रियता, प्रजा के सुख की चिन्ता, गुरुतर कर्तव्यनिष्ठा. वर्णाश्रम धर्म की परिपुष्टि, अपराध और न्याय, भरत इति लोकस्य भरणात् ।

५. **'विक्रमोर्वशीयम्' में पुरूरवा और उनका राजतन्त्र** ९५–११२
महाराज पुरूरवा का पौरुष, अहंरहित पौरुष, राजा के कर्त्तव्य और उसका प्रेम, राजपद की अनुभूति, राजकुमार आयु का राज्याभिषेक, राज्याभिषेक की विधि, सर्वः सर्वत्र नन्दतु ।

६. **'मालविकाग्निमित्रम्' में राजतन्त्र का रूप** ११३–१३६
कलाप्रिय राजपरिवार, रनिवास की राजनीति, राजा की नैतिकता, राजा की इच्छा और उसकी पूर्ति, अग्निमित्र एवं उनकी परराष्ट्र-नीति, मन्त्रिपरिषद् की योग्यता, पराजित राजा के प्रति विजेता का व्यवहार, अग्निमित्र की प्रभुसत्ता, विजयभेंट अथवा उपहार, भरत वाक्य ।

७. **कालिदास का राजतन्त्र-एक दृष्टि में** १३७-२३७
राज्य एवं राजा की उपयोगिता, राज्य के सप्ताङ्ग, राजा में देवत्व, राजा की आत्मसम्पत्, भीमकान्त गुण, पुष्टांगता, आत्म विजय, बल, वीरता एवं साहस, तप और त्याग, क्षमा, दया तथा विनम्रता, राजा के विहित कर्त्तव्य, राजा प्रकृतिरञ्जनात्, वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था, प्रजा की रक्षा, न्याय व्यवस्था और दण्ड, यज्ञ और दान, राजा की दिनचर्या, राजा के निषिद्ध आचरण, अमात्य परिषद्, मन्त्रि परिषद् के कार्य, मन्त्रियों का सम्मान, पुरोधा, कोष, पुर तथा राष्ट्र, सैन्य बल, सुहृद, षाड्गुण्य, शक्ति-त्रय, प्रभु शक्ति, मन्त्र शक्ति, उत्साह शक्ति, राजतन्त्र की सफलता ।

परिशिष्ट-सहायक ग्रन्थ सूची २३८-२४२

संकेत-सूची २४३